[illegible] का कुरिया



छत्तीसगढ़

बर

सोनहा बिहान

के

सपना देखइय्या

स्व. डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

के

सुरता म

सादर समरपित

छितका कुरिया

(छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन)

कवि

सुशील वर्मा

सम्पादक

डॉ. व्यासनारायण दुबे

पहिली संस्करन : अगस्त १९८९

दाम : पांच रुपिया

मुद्रक

मिथलेश कुमार वर्मा

नेशनल प्रिंटर्स

संजय नगर, रायपुर

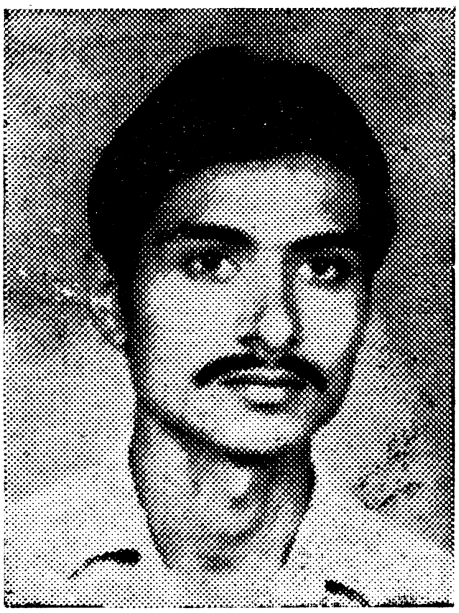
प्रकाशक

मयारु माटी प्रकाशन

डॉ. बघेल गली

संजय नगर, रायपुर-४९२००१

कवि सुशील वर्मा



(२-७-१९६१)

मुकुटधर पाण्डेय
पद्मश्री
साहित्य-वाचस्पति, डी० लिट

बैकुण्ठपुर
रायगढ़ (म० प्र०)

पत्रांक..............

दिनांक ८-३-८९

श्रीमान्:

नवोदित कवि सुशील वर्मा के काव्य संकलन 'छितका कुरिया' म नाम के अनुरूप, गरीबी रेखा ले-पार बसइया हलवाहा मजदूर किसान मन के जीवन के विदग्धता पूर्ण चित्रण हवय। एक तरफ तो गँवई गाँव के उमंग उत्साह अउ भोलापन है, प्रकृति सौन्दर्य के सुघ्घर झाँकी है, तो दूसर तरफ शोषण कर्ता मन के विरुद्ध आक्रोश है। कवि म यथार्थ अउ कल्पना के बढ़िया मेल हवय। उनमें अपन माटी के सोंधी महक समाय हवय। कवि म प्रतिभा है। इनके नहीं, उन मा युग के पहिचान अउ ओला वाणी देहे के सामर्थ घलो हवय। यहा शिल्प म मांजन के जरूरत हवय। लेखनी धीरे धीरे मंजाये, एकर ले ध्यान म रखना चाही।

आज तक मैं उनकर सम्पादकीय रूप के प्रशंसक रहेंव। उन कर द्वारा सम्पादित 'पयार माटी' के छत्तीसगढ़ी साहित्य के इतिहास म स्थायी महत्व रही, मैं जानत हौं, फेर उन कर कवि रूप ला देख के अउ ज्यादा खुशी होत हवय। 'छितका कुरिया' संकलन पढ़ के मोला 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाला उक्ति याद आ गइस।

उज्वल भविष्य के कामना सहित

मुकुटधर पाण्डेय

रायगढ़
महाशिवरात्रि
सम्वत २०४५ विक्रमाब्द

भूमिका

'छितका कुरिया' सुशील वर्मा के कविता के पहिली किताब आय। नानकन बीज म सइघो पेड़ समाय रइथे, वोइसने ए संकलन म एक जनवादी कवि के संभावना छिपे हवय। एमा उवत सूरज के अंजोर हे, जेमा लुकाय हुए चीज अउ बदले हुए मनखे के सकल-सूरत दिखे लागथें। कवि के किशोर भावना इहां जीवन के कटु यथार्थ ले उपजे हे। ओमा युग व्यापी असन्तोष, रोष अउ विद्रोह ल व्यक्त करे के भारी छटपटाहट देखे जा सकत हे। इहां कवि कहूं मेर कल्पना के सरग रचत या हवाई महल खड़े करत नजर नइ आवत हे, ओकर जमीन ठोस हे, वो मुरमी जमीन म खड़े हे, एकरेच कारन वोकर बानी म ठनक हे, ओकर कविता के सेवाद अउ गंध पसीना जइसे नमकीन हवय।

कवि परम्परा के पोषक नोहय, ओकर सोंच सुराज के बाद जटिल परिस्थिति ले उपजे सोच आय, आज के कवि के वास्तविक चिन्ता का होना चाहिए, ए बात के प्रमान ए किताब म जगा-जगा मिलथे—

गांधी के सपना सुराज आत्ते-आत नंदागे
रोटी के दौंरी म तन मन आज फंदागे
बियाज सहीं बाढ़त हे छन छन म भूख
खाता म लिखागे जिनगी भर बर दुख

अन्तिम डांड़ सूजी के नोक असन नुकीला हे, घाव के मुड़ी ल छुवाय के देरी हे। ए देस म खास करके छत्तीसगढ़ जइसन पिछड़ा इलाका म हर साल अंकाल पड़थे। सावन म हरियर खेत उजर जाथे। चारों मुड़ा पलायन होथे, गरीब के दुख के ओर छोर नइये। नकटी के नाक कस मंहगाई बाढ़त हे। आदमी बन्धवा मजदूर हो गय हे, सुशील वर्मा ए स्थिति ल पंचतंत्र जइसन पात्र के निर्मान करकें अभिव्यक्ति देथें—

पीठ म सील लादे आवत / बेलदार के गदहा
तरिया ले गठरी आदे आवत / धोबी कें गदहा ल पूछिस—
कस जी ! बन्धवा मजदूर काला कइथें ?

दूसर डहर फक् उज्जर कपड़ा पहिने खद्दर धारी हें, जउन मौका बेमौका मेचका कस टर्राथें। इन देस के बेंदरा बिनास कर दीन इंकर सह म पनपत हे बयपारी, अप्सर, खाकी वर्दीधारी अउ पटवारी थाना म कुकरी अउ दारू के जोर हे। बहू-बेटी के इज्जत लूटे जात हे। थाना म पुलिस के मार ले कोनो मर जाही त ओहर हत्या नोहय, कानून जइसे कोनो चीज नइ रह गइस, जेकर लाठी अउ पइसा तेकर कानून। सब जगह सोसन अउ अत्याचार के बोलबाला हे। कवि ल कार्य-कारन के स्पष्ट पहिचान हे, ओकर चोट सधे हुए हवय–

सिट्ठागे अब तो सेवा के गोठ ह
चोरहा ल राजा बना दिस हमर वोट ह

कवि अइसन स्थिति म खटिया म सूते नइ बर्रावें, वो अन्याय अउ सोसन के विरोध म जोमियाय लागथे, ओकर आवहान सुनौ–

अरे चलव बढ़व लाठी-गोली खाए बर फेर आघू आवब
अंगरेजवा के नास करेव अब अंगरेजियत के नास करव

लेकिन आज नवा पीढ़ी दिसाहीन हे, ओती ले कवि निरास हे––'नान नान पतरेंगवा टुरा होगे रे मुड़पिरवा' जइसन पंक्ति म कवि कें दुख अउ रोष हर प्रकट होवत हे।

सन् १८५७ के गदर के बाद इहां लगातार दुकाल पड़िस आदमी पलायन करिन अउ महामारी के सिकार होइन, अइ समय हमर देस म पूंजीवादी सभ्यता के फैलाव होइस, वो आज ले जारी हे, कवि कें व्यंग देखे लाइक हे–

अंटावत तरिया के पिलवा मछरी पूछिस–
कस दाई-पानी नइ गिरे ले / दुकाल हर
हमरेच बर कावर परथे ?
वो 'सादा' पांख वाला / कोकड़ा बर तो
एकर ले एकदम सुकाल होथे

'छितका कुरिया' शीर्षक कविता कवि के विचार-धारा के केन्द्रीय-बिन्दु आय। एकर बहाना म वो पूरा देस कें गरीबी अउ दुरदसा के बरनन करे हावय। मनखे कें भाग जइसन कविता म कवि कें व्यंग बड़ बारीक अउ असरदार हे। वो 'नियतवाद' जइसन

धारना कें खुल के मखौल उड़ाय हे–

कइसे के आय बगीचा विधाता
एके जगा सब फूल फूले हे
एक ठन देव के सीस चघत हे
अउ एक ठन ह अइंला के मरत हे

संस्कृत कें कोनो कवि के कथन हे–

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः
मूर्दिनवा सर्वलोकस्य विशीर्येतवनेऽथवा

लेकिन सुशील वर्मा आज के कवि आंय 'विधाता' के नकाब ल उन खींच कें निकाल देहे म भय नइ करें। राजनीति के दांव-पेंच ल भले ही जुन्ना-फुन्ना पटन्तर के दुवारा व्यक्त करथें, फेर लोक-प्रचलित धारना घलउ ल उन कगरिया के असली मार कें जगह पहुंच जाथें। एक ठन उदाहरन देखा–

बसन्त कें उमंग ह। राँड़ी बर आन अउ
एंहवाती बर आन होथे
लोहा ह। कसाई बर आन, अउ
मंदिर बर आन होथे

आगे उंकर व्यंग हर धारदार हो जाथे–

वोइसनेच। ए पानी के कमी ह। हमर बर आन, अउ
कोकड़ा बर आन होथे।

देस कें संस्कृति कृषि प्रधान आय। छत्तीसगढ़ तो ठेठ खेतिहर इलाका आय। लेकिन आजो ले इहां जमीन रोकाय जमींदार अउ मालगुजार भरे हें, उंकर हुकूमत पहिलीच कस चले आत हे। श्रम करे म आदमी कतराय लगे हें--दुधारी कविता के मार देखा–

जांगर खातिर जब ककरो खेती परिया परथे
अउ बिन खेंती कें जब कोनो जांगर परिया परथे

कवि अपन किशोरे अवस्था म जिम्मेदार सियान कस बात करे लगत हे, ए समय तो ओला आन संगी जंवरिहा कस अपन उमर के गीत गाना रहिसें। फेर जब छय महीना कें लइका ल वो

खड़े मंझनिया, टूटहा घर के रखवारी करत देखथे, त अवाक हो जाथे। महतारी बेटा के बीच म गउंटिया के भूती लछमन रेखा कस खिचाय जउन हावय। तभ्भो ले ओ गंवई-गांव के सरलता, सहज, सरस जीवन अउ प्रकृति के सुन्दरता ल अपन कल्पना के रंग देहे म नइ चूके हे। बसन्त अउ जड़कल्ला के बरनन म तो उन कमाल कर देहे हावय। कवि प्रचलित मुहाविरा के भरपूर उपयोग करे हे, लेकिन ओमा मौलिकता के भी कमी नइये। सुशील वर्मा अपन ज्येष्ठ कवि हरि ठाकुर, श्यामलाल चतुर्वेदी, नारायण लाल परमार जइसन कवि से बड़ परभावित हे। उन इंकर कविता से अपन काव्य-संस्कार ल बड़ सुघ्घर रूप म विकसित करे हावंय। कवि समर्थ कवि मन के प्रभाव ग्रहण करय अउ उंकर मंजिल ले आघू के यात्रा सुरू करय, अइ हर जातीय-चेतना कहलाथे, जे साहित्य म बहुत बड़े चीज आय। कवि सुशील वर्मा म एकर पूरा पूरा संभावना हें, संक्षेप म उन सचेत कवि आय, अउ अपन समय ले बेखबर नइये। उंकर कविता के मूल स्वर व्यंग आय। आवा ए निडर अउ साहसी कवि के संग मुखा-माखी करा, इंकर से, इंकर कविता से चिन्हारी करा—

> अरे एही हर तो। पंचाइती राज के सुरूआत ये
> अब तो रोज हत्या होही। बैंक लुटाही। इज्जत बेचाही
> अउ राजनीति के यज्ञ म। तभे तो गांधी के भारत
> एक्कीसवीं सदी म जाही।

डॉ. बलदेव
श्री शारदा साहित्य सदन
बैकुण्ठपुर, रायगढ़

रायगढ़ १०-३-१९८९

सम्पादकीय

कोनो भासा के तरक्की म ओखर तीर-तखार के बोलीमन के सहयोग अउ महत्त्व अब्बड़ होथे। बोली अपन देश अउ परदेश के रहन–सहन, रीत–रिवाज के येक हिस्सा होथे। ओखर फैलाव सभ्यता अउ संस्कृति के संगे-संग होवत जाथे। इही सब दृष्टि ले विचार करे ले जान पड़थे कि 'छत्तीसगढ़ी' ह येक अइसन संस्कृति ल आधार ले के जनमे हवय, जेखर इतिहास बहुत पुराना हवय। लिखाय प्रमाण ले पता चलथे कि छत्तीसगढ़ी भासा के बिकास आज ले लगभग ११६६ बरस पहले अर्थात नौंवी सताब्दी म अर्धमागधी नाम के अपभ्रंश ले होय रहिस। बोलइया मनखेमन के संख्या के दृष्टि ले छत्तीसगढ़ी बोलइया मन के संख्या आज के समय म डेढ़ करोड़ ले घला जादा हो गे हवय। अपन इही सब बिस्तार खातिर 'छत्तीसगढ़ी' ह अब भासा के रूप ल धारण कर ले हावय।

छत्तीसगढ़ी भासा म साहित्य रचना के जानकारी आज ले येक हजार बरस पहले शुरू हो गे रहिस, फेर येमा लिखे साहित्य के अभाव देथे। साहित्य–रचना के कुछ-कुछ (परमान) प्रमाण अवश्य मिलथे, जेखर आधार ले ये बात सिद्ध करे जा सकथे। छत्तीसगढ़ी भासा आधुनिक युग के साहित्य लेखन के सबोच क्षेत्र म बड़ उपयोगी सिद्ध होय हवय। ये युग म काव्य लेखन के संगे–संग गद्य लेखन के क्षेत्र म घला जोर पकड़ीस। साहित्य लेखन के बिकास म पत्र–पत्रिका अउ प्रकाशन के अभाव ह अड़ंगा के येक कारन बनिस, तो येखर दूसर कारन येहू हर आय कि छत्तीसगढ़ी साहित्य के लेखन म एकरूपता के अभाव रिहिस। प्रकाशन के अभाव म आजो कतको लिखे छत्तीसगढ़ी साहित्य दियार खात संदूक अउ कोठरी म धराय हवय। कहू प्रकाशन के सुविधा के जुगाड़ जम जातिस त हमर छत्तीसगढ़ी साहित्य ल ये दिन देखे ल नइ पड़तिस।

साहित्य लेखन के क्षेत्र म छत्तीसगढ़ी काव्य गद्य के बनिस्बत जादा सम्पन्न अउ पोठ हवय। आधुनिक युग म ठेठ छत्तीसगढ़ी भासा म काव्य लेखन म पंडित सुन्दरलाल शर्मा के नाम अमर हवय। 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' ओखर अमर कृति आय। इही संबंध

म राय बहादुर हीरालाल जी के ये कथन सहीं साबित होथे कि – "मोर राय म जउने हर एला बनाइस हे, तउने हर नाम कमाइस हे।" दानलीला के पाछू 'छत्तीसगढ़ी रामायन' महाकाव्य लिखिस जेमा वोहर छत्तीसगढ़ के ग्रामीन संस्कृति अउ सभ्यता ल बड़ सुघ्घर ढंग ले गुथे हवय। सुन्दरलाल शर्मा जी के पाछू छत्तीसगढ़ी काव्य लेखन के क्षेत्र म जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', कपिलनाथ मिश्र अउ शुकलाल प्रसाद पाण्डेय के नाम आदर ले लिये जा सकथे। जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' के उल्लेखनीय रचना 'श्री मातेश्वरी सेवा के गुटका' हवय, ये रचना म वोहर माता-सेवा के गीत ल साहित्यिक रूप म ढाल के प्रस्तुत करे हवय। कपिलनाथ मिश्र के 'खुसरा चिरई के बिहाव' उल्लेखनीय अउ प्रसंसनीय हवय। यक दृष्टि ले ये काव्य हर चिरई अउ रूख (झाड़) बिसयक छत्तीसगढ़ी सब्दकोस आय। रायपुर म जनमे शुकलाल प्रसाद पाण्डेय 'गीया' 'छत्तीसगढ़ी ग्राम्य गीत' लिखिन जेमा वोहर छत्तीसगढ़ के ग्रामीन जन-जीवन के स्थिति अउ भासा के सुन्दर चित्रण करे हवैय।

स्वाधीनता आन्दोलन के समय छत्तीसगढ़ी लेखन के क्षेत्र म कुंज बिहारी चौबे, गिरिवरदास वैष्णव, पुरुषोत्तम लाल, गया प्रसाद बसेढ़िया, गोविन्द राव विट्ठल, कुंवर दलपत सिंह अउ किसनलाल ढोटे के नाम उल्लेखनीय हवय, जेमन वो काल म अपन लेखन के माध्यम ले देस, समाज अउ भासा के विकास अउ समृद्धि खातिर अपन कलम चलइन। येखर बाद के क्रम म प्यारेलाल गुप्त, कोदू राम 'दलित', द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के नाम आथे। जेमन अपन रचना के माध्यम ले ग्रामीण जीवन के चित्रण अउ सामाजिक सुधार म अपन योग देइन। समर्थ काव्यकार के रूप म श्यामलाल चतुर्वेदी अउ रामशरण तम्बोली अपन विशेष स्थान रखथें।

आधुनिक छत्तीसगढ़ी काव्य लेखन कें सुरूवात 'छत्तीसगढ़ी' मासिक पत्रिका के प्रकाशन ले माने जा सकथे। इही समय म नवा-नवा नाम उभरिस अउ छत्तीसगढ़ी साहित्य ल पोठ करे म अपन हाथ बटाइन, जेमा लखनलाल गुप्त, लाला जगदलपुरी, नारायण लाल परमार, दिगम्बर नाथ शर्मा, रामविलास साहू, ध्रुव कुमार वर्मा, रामप्यारे सिंह, चैतराम व्यास, विमल कुमार पाठक, फूलचन्द

'रायगढ़िया', नरेंद्र देव वर्मा, राजदीप, लक्ति मोहन श्रीवास्तव, केयूर भूषण, दानेश्वर शर्मा, हरि ठाकुर के गीत अउ कविता उल्लेखनीय हवै। येखर बाद के साहित्यकार म रामेश्वर वैष्णव, लक्ष्मण मस्तुरिया, जमना प्रसाद यादव, हेमनाथ यदु, विद्या भूषण मिश्र, अखेचन्द क्लान्त, पवन दीवान, भगवती लाल सेन, त्रिभुवन पाण्डेय, बसन्त दीवान, उदय कुमार कमल अउ झाड़ूराम तिलवार के नाम घला अपन महत्वपूर्ण स्थान रखथे।

'छत्तीसगढ़ी' मासिक पत्रिका कें प्रकाशन सुरू होय ले नवा-नवा कथा अउ कहानीकार कें नाम उभर के सामने अइस, जेमा डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा, डॉ. नरेंद्र देव वर्मा, शंकर लाल शुक्ल, विनोद परमार, ध्रुव कुमार वर्मा, नारायण लाल परमार, शिव शंकर शुक्ल, हेमनाथ यदु, रंजनलाल पाठक, जइसन कथाकार मन के नाम आदर के साथ लेय जाथे। बड़का कहानीकार कें रूप म टिकेन्द्र टिकरिहा आरुग छत्तीसगढ़ी म लिख के अपन नाम उजागर करे हें।

छत्तीसगढ़ी के विकास यात्रा म छत्तीसगढ़िया मन के जोश अउ स्वाभिमान ल जगाय खातिर दाऊ रामचंद्र देशमुख के नाम अउ काम सबले उपर ठउर रखथें। वोहर 'चंदैनी गोंदा' अउ 'कारी' के माध्यम ले छत्तीसगढ़ अउ छत्तीसगढ़ी के महान सेवा करे हवय। इही क्रम म अइसनेच काम भाई जागेश्वर प्रसाद घला करत आवत हवय। वोहर सरलग पच्चीस बरस ले आरुग छत्तीसगढ़ी म 'छत्तीसगढ़ी सेवक' साप्ताहिक पत्रिका निकालत हवय। इही बरस ओखर पत्रिका के 'रजत जयंती' बरस आय। ओखरे सहयोग ले ३० अगस्त सन् १९८७ के दिन छत्तीसगढ़ स्तरीय भासा अउ साहित्य के विकास खातिर प्रथम सम्मेलन के आयोजन रायपुर म होय रहिस, जेमा 'छत्तीसगढ़ी भासा-साहित्य प्रचार समिति' के गठन करे गिस। तब ले समिति हर भासा अउ साहित्य के बिकास खातिर लगातार काम करत हवय। समिति के प्रचार सचिव भाई सुशील वर्मा के प्रयास घला सराहनीय हवय, येखर खुद के प्रयास ले 'मयारु माटी' आरुग छत्तीसगढ़ी मासिक पत्रिका दिसम्बर १९८७ ले निकलत हवय। छोटकुन उमर म वोहर छत्तीसगढ़ी के सेवा

खातिर किसम-किसम के उदिम करत हवय । इही उदिम के रूप म 'छितका कुरिया' ओखर पहला काव्य संकलन आय, जेमा कवि-हृदय के अनेक रूप कविता के माध्यम ले प्रगट होथे, जइसन—

जिनगी जिहां पहुना होथे,
भूख कोठी म लांघन मरथे ।
अइसन अलकर ठीहा ल,
मोर छितका कुरिया कइथे ।।

जीवन के घुप्प-अंधियार म आलोक के जयगाथा रचइया भाई सुशील वर्मा के रचना-संसार ल ये काव्य-संकलन के माध्यम ले छत्तीसगढ़ी बोलइया अउ समझइया गुनी लोगन के बीच म रखत मोला अगाध प्रसन्नता होवत हवय ।

डॉ. व्यासनारायण दुबे
अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ी भासा-साहित्य प्रचार समिति
अउ
व्याख्याता,
भाषाविज्ञान एवं भाषा-विभाग
रवि. वि. वि., रायपुर

असाड़ कृष्ण पक्ष, अकादसी
विक्रम संवत् २०४६

सोसन–कानून

बछरू ह गाय ल पूछिस–
दाई ! सोसन काला कइथे ?
गाय कहिस–
बेटा ! तैं हर
खूंटा म बंधाय
जुच्छा पैरा ल
पगुरावत रइथस, अउ
हमर मालिक ह
मोर थन ल दुह के
अपन बेटा ल पियाथे
इही ल तो सोसन कइथे !
तब गुस्सा म अंटियावत
बछरू फेर पूछिस–
दाई ! का ये देस म
अइसन कानून नइहे
जेमा हम
सोसन करइया के खिलाफ
लड़ सकन
अपन महतारी के
दूध पी सकन ?
दाई कहिस–बेटा...!
इहां के कानून ल
तैं नई जानस रें
इहां तो
जेकर हाथ म
पइसा अउ लाठी होथे
इहां के कानून ह
ओकरेच तो बपौती होथे ।

लइका राखत हे

भूइयां म बिछे
चिराथ बोरा म
लइका सूते रोवत हे ।
अंगना म ककरो छांव नइहे
छांव कें नांव म
ए जेठ के मंझनिया म
लइकच कें छांव हे अंगना म ।
दाई हर पानी भरे बर
आन गांव के तरिया गे हे
अउ ददा हर
गौंटिया के खेत म
अंकरस जोतत हे ।
ए छितका
खदर छाये
अउ कोन्टा भोसके घर ल
छै महीना के लइका
भूख म
रोवत राखत हे ।

००००

बंधुआ मजदूर

अपन पीठ म
सील लाद कें आवत
बेलदार के गदहा ह
तरिया ले
गठरी लाद के आवत
धोबी के गदहा ल पूछिस–
कस जी !
बंधुवा मजदूर काला कइथे ?

छरागे हे मनखे

बाहना कें मेरखू सहीं छरागे हें मनखे ।
नंदिया खंड़ के रूख होगे हे मनखे ।।
नकटी के नाक सहीं बाढ़त हे मंहगाई,
काला खा-पी कें परान हम बंचाई ।
रावन कें राज सहीं खड़े हे देखौ तनकें ।।
जोगनी कें आस रहिगे बिजली के जुग म,
चारों खूंट चोर लहुटगे खाये के सुध म ।
कहूं गरकट्टा त कहूं बनगे 'गोंडसे' ।।
हुंड़रा कें रखवारी म कोलिहा कें भाग जागे,
साधू के भेंस सहीं रकसा ह रूप खापे ।
कभू दुत्कारथे ते कभू पीटथे हनके ।।

इक्कीसवीं सदी

ओ दिन मैं सुनेंव, के
ओ लइका के हत्या, अउ
बैंक डकैती म
हमर विधायक कें हाथ हे ।
तब मैं गुनेंव-
अरे, इही हर तो
पंचैती राज के सुरूआत ये ।
अब तो
रोज हत्या होही,
बैंक लूटाही/इज्जत बेचाही
अउ राजनीति के यज्ञ म
जनता मन कें हूम देवाही
तभे तो गांधी के भारत
इक्कीसवीं सदी म जाही ।

टर्रावत हे भाई

टर्र टर्र मेचका टर्रावत हे भाई ।
साल भर म नेता कस जुरियावत हे भाई ।।
बादर देख पंड़की, अउ
नाचत हे सलहई
छानही म सपटत हे
बाम्हन चिरई
बदक बइहा पानी म मेछरावत हे भाई ।
रिमझिम बरसत पानी के
का कहिबे चाल
चूहत खदर वाला के
पूछ ले तैं हाल
पक्की छत वाला मेंछा अंइठत हे भाई ।
नान-नान लइका
उतार दिन पेंठ
कोलिहा घलो मेंड़ म
मारत हे सेंध
कवि सूते खटिया म बर्राबत हे भाई ।
टर्र-टर्र मेंचका टर्रावत हे भाई ।।

लछमन रेखा

धरती संग मिले बर
करिया बादर सहीं
लइका घलो
महतारी बर बियाकुल हे ।
फेर
लइका अउ
महतारी के मिलन म
दाऊ के भूति हर
लछमन रेखा बनत हे ।

भोरहा म रइथे

कुकुर अपन पूछी ल टेड़गा कब कइथ ?
साहेब असन भोरहा म उहू ह रइथे ।।
खाखी पेंठधारी के का कहिबे चाल ल
रद्दा रेंगत सिधवा के पूछ ले तैं हाल ल
थाना के मरई ल हत्या कभू कइथे ?
नवा-नवा म कइसे मेछराथे सरपंच
जुन्ना होथे तहांले उहू रचथे परपंच
नेता के अस्वासन ल लबारी कभू कइथे ?
फोकटे-फोकट लूटत हे भोकवा पटवारी
लइका देखाके जइसे नोट पाथे छेवारी
भेंट चघाय पइसा ल घूस कभू कइथे ?

बेकार होगे

हम का-का सोंचे रेहेन सब बेकार होगे रे ।
मोर देस के बंठाधार होगे रे ।।
जइसन-जइसन घर-दुवार
तइसन रहिथे फरिका
ददा अतेक उतियइल हावय
तेकर कइसन होही लइका
मनखे ह मनखे बर बिसवासघाती होगे रे ।
जेने दिखथे रिंगी-चिंगी
तेने बनत हे सब बर बैरी
मुसवा असन कुसवा मन
नइ नाहकय अब डेंहरी
एदे कोलिहा ह बघवा के काल होगे रे ।
नान-नान पतरेंगवा टूरा
होगे हें मुड़ पिरवा
जेने खाय बर देथें इनला
तेकरे थारी म डारें किरवा
अब तो कुकुर ह मालिक के भगवान होगे रे ।

बेंदरा बिनास

बेंदरा बिनास होगे राम मोर
जिवरा हतास होगे न....
स्वारथ के खातिर मोरे, कूटा-कूटा देंह होगे,
सावन म कइसे रे ये, बइरी पतझड़ हबरगे।
करम म दनगारा छांड़गे राम मोर...
दहरा खदान बनगे, खेत खार डोली
खेलथें मिलके सबो रे, लहू के होली।
हितवा सब बइरी होगे राम मोर...
बेटा तो दाऊ बनगे, बाप होगे चाकर,
तरिया ले कइसे होगे, छोटे ये सागर।
माथा म दागी लगगे राम मोर...
करम अब तो फूटगे मोरो, रांड़ी के चूरी सहीं,
जिवरा कलपगे रामा, दाहरा के मछरी सहीं।
जिनगी उधार होगे राम मोर...

oooo

नेताजी के आरती

ओम जय नेता देंवता,
के स्वामी जय नेता देंवता।
बोरे बासी ल हाथ नइ लगावस,
जनता के लहू के हे नेवता।। के..
दुख, गरीबी अउ अत्याचार के
तोर राज म हे डेरा। के...
भ्रष्टाचारी अउ घूसखोर मन-२
राज करत हें देंवता।। के..
पंच, सरपंच, विधायक
अउ सांसद करथे तोर सेवा। के..
पुजारी मन तोला भोग चढ़ाथें-२
हाड़-मांस के मेवा।। के..

गांव बगरगे

आज बिधाता कइसे होगे ।
सावन म मोर खेत उजरगे ।।
घन घपटे बादर के आंखी
चुचवाये छोंड़ अंगरा बनगे,
धनहा डोली मोर खेत खार
तुरत-फुरत परिया परगे ।
ठन-ठांय करत जांगर-नांगर
सुक्खा म रे केंवची होगे ।
टंगिया-बसुला रापा-गैंती
सब भोथवा कस परबस होगे ।
सुन-सान होगे अब गली-खोर
तरिया-नंदिया समसान लहुटगे,
रोटी खातिर होवत पलायन
छन भर म मोर गांव बगरगे ।

मनखे के भाग

मनखे के भाग बड़े बिचरित हे
कोनो राजा अउ कोनो गरीब हे
कोनो ह खा-खा के मोट्ठा बनत हे
अउ कोनो भूख म टेटक के मरत हे
ककरो लइका पोंसे हे कुकुर
खवाथे रोटी अउ दूध पियाथे
अउ ककरो लइका लालच म रोटी के
किंजरत हे पाछू-पाछू कुकुर के
कइसे यें आय बगीचा बिधाता
एके जघा सब फूल फूले हे
एक ठन देव के सीस चघत हे
अउ एक ठन ह अइला के झरत हे

जाड़

जब दिन छोटे अउ बड़का रात ह लागय ।
पूस के चूनर ओढ़के तब जाड़ ह आवय ।।
कोनो भूर्री वारय अउ कोनो गोरसी तापय ।
सुरूज मोर पिया वनके देंह ल तपावय ।।
बिरहा के अगनी तब भुर्री बन जरय ।
जोड़ी जव रात भर दौंरी कुदावय ।।
हिरदे के अंगना मोर मया म भर जावय ।
कोनो कमरा ओढ़ के जब धान ल ओसावय ।।
खेत-खार सुन्ना बियारा सरग लागय ।
लछमी ल घर लेगे बर जब बिसनु बन जावय ।।

बसंत

अमरइया म बसंत हे, ते
बसंत म अमरइया हे
माते-पीये मंद जइसे
इहां के लइका बुढ़वा हे
मार छतराये परसा फूल कस
एंहवाती मंजा उड़ावत हे
मार के मन ल वो रांड़ी ह
फूटत पिहरी ल रौंदत हे
बन बाला तो बही बनके
अंधना कस उफनावत हे
अउ ए बिरहिन ह अपन पीरा म
सिपचत गोरसी कस लागत हे
सेम्हरा पेंड़ कस दिखत सपेरा
नागिन कइसे नाथत हे
सुघ्घर फूल के जइसे भंवरा
अधरे- अधर रस चुहकत हे

गैस त्रासदी रोज होवत हे

जेन अंगना म धान ओसावन
तेन म आज महाभारत होवत हे ।
मोर गांव के गली-गली म
गैस त्रासदी रोज होवत हे ।।

बारी बखरी म जहर-धतुरा
अमरबेल कस छिछलत हे ।
जेन धरती ल सरग काहन
आज नरक कस लागत हे ।।

अब तो रोजे द्रौपदी लूटथे
हमर गांव के थाना म ।
जेन ढार ल रक्षक काहन
तेने आज तीर बनत हे ।।

फूलवारी म डोमी सांप कस
टोनही-मसान के डेरा होगे ।
जेन मंदिर म फूल चढ़ावन
तेने म आज बलि चढ़त हे ।।

अरे पोथी पढ़ना छोड़ के 'सुकुवा'
जिनगी चारी म बीतत हे ।
जेन साधु के महिमा गावन
तेन आज सुवारथ म मरत हें ।।

पुतरी सहीं

माटी काबर तैं गढ़े राम पुतरी सहीं ।
जिनगी काबर सजाए राम बमरी सहीं ।।
लहू म लथपथ होगें आज जिवरा मोरे
कांटच-कांटा बदे हे का भाग म मोरे
का मैं तुरतेच झर जाहूं राम पिकरी सहीं ।।
का तैं पेट ल मोरे भूख के सेती बनाये
का तैं रस्ता म कांटा ल जान के बिछाये
देखले देंह ल होगे मोर चिथरी सहीं ।।
कब आही जिनगी म मोरो अंजोर
कब बनहूं महूं ह तोरे कस सजोर
अइसन कब तक अउ जीबो राम कुधरी सहीं

एक घंव तो बरही

जब मोला सुरता आइस, के
आज देवारी ये, त
मैं 'वो' दिया ल
संदुक ले निकालेंव
जेन
तीन सौ चौसठ दिन तक
संदुके म धंधाय रहिस।
तब वोकर बाती खातिर
मोर जघा, पोनी के
कुटका घलो नइ रहिस।
फेर आज
अपन कुरता के अस्तीन के
वोकर बाती बनाय हौं।
काबर ते
मोला भरोसा हे, के
मैं ह
घाम म खड़े रहिके
जेन पछीना सकेलें हौं
तेन आज
तेल के काम करही
अउ ए दिया ह
साल म
कम से कम
एक घंव तो बरही।

काबर

अंटावत तरिया के पानी म
चिभोरा मारत
पिलवा मछरी पूछिस–
कस दाई !
पानी के नइ गिरे ले
दुकाल हर
हमरेच बर काबर परथे ?
वो 'सादा' पांख वाला
कोकड़ा बर तो एकर ले
एकदम सुकाल होथे !
आखिर एके ठन चीच ह
दू आन-आन समाज बर
आन-आन कइसे होथे ?
त मछरी कहिस–
बेटा ! बसंत के उमंग ह
रांड़ी बर आन, अउ
एंहवाती बर आन होथे
लोहा ह
कसई बर आन, अउ
मंदिर बर आन होथे
वइसनेच
ए पानी के कमी ह
हमर बर आन, अउ
'कोकड़ा' बर आन होथे ।

आन होथे

मस्ति म मस्तियावत
खखाय सहीं चुहकत
मनखे ल
ठूठी बिड़ी घलो भभक के
चट ले जरो देथे ।
थके-मांदे सुरूज ह
संझा के बेरा घलो
अंजोरी म
चंदैनी ल हरो देथे ।
जलरंग भरे तरिया के
घमंड ल
टुटही डोंगी घलो टोर देथे ।
हजारों लोगन के
मिहनत म बने
बांध के छाती ल
रेंटहा केकरा घलो फोर देथे ।

तब
जिनगी भर डंडा झेलत
अपन देंह ल गलो के
ओकर पेट भरत
अकेल्ला, अतियाचारी
कसई संग
काबर जूझ नइ सकय
भेंड़वा के रेड़ ह ।

छितका कुरिया

जिनगी जिहां पहुना होथे
भूख कोठी म लांघन मरथे ।
अइसन अलकर ठीहा ल
मोर छितका कुरिया कइथे ।।

रोटी-पीठा सपना जइसे
खीर-तसमई ह नोहर होथे ।
कोदो-दरबन के पसिया ह
जिहां बर अमरित होथे ।।

कपड़ा-लत्ता फरिया-चेंदरा
जड़काल्ला म हड़ताल मनाथें ।
सेटर-कमरा रजई-उजई ह
जेला दुरिहा ले ठेंगा देखाथे ।।

पान-पतइला कांसी-पैरा
छत म जेकर बेसरम सजथे ।
कोठ के भोसके पोंडा ह
जेकर खिड़की नांव धराथे ।।

बुचवा चिमनी कंडील-वाली
अंधियारी संग खांध मिलाथे ।
गोरसी-अंगरा चुलहा-सिगड़ी
जिहां तीन धार के रोथे ।।

नांगर-बक्खर माल मता
जिहां सौंजिया सब्बो होथे ।
सुरुज नराएन नियाव छोंड़
जिहां भेदभाव अपनाथे ।।

देंह खियावत जिनगी जेकर
दूसर बर रे बीतथे ।
राम राज के सबरी जइसन
जेकर तन-मन होथे ।।

[illegible]-ईमान नौकर-चाकर
फेर फोकट म [illegible] होथे ।

जांगर चोर सूते गद्दी म
जेला बेंदरा नाच नचाथे ।।
फेर जब घर के इज्जत म
चील-कउंवा ह झूमथे ।
तब जय कंकाली जय महमाई
बोली-बोले लगथे ।।
लंदी-फंदी ढोंग-धथुरा
साहत भर ले सहिथें ।
फेर बगियाये म रे वो तो
अलकर समर मचाथे ।।

पहिलीच कस कहानी होगे

फेर मोर जिनगी घानी होगे ।
पहिलीच कस कहानी होगे ।।
दुख-पीरा सोसन बइमानी
फेर आज खूब फरत-फूलत हे ।
अत्याचार अउ घूसखोरी ह
छाती ताने मेछा ऐंवट हे ।
अइसन समर मचाय हे ये
जन-जन पानी-पानीं होगे ।।
चोरहा, लबरा, मंत्री, संतरी
दोगला होगे सब अधिकारीं ।
कुम्भकरन कस नींद भांजत हे
लहू चुहक के बेपारी ।
जनता बपरी कुसियार सहीं
चुहका के रे छोही होगे ।।
अरे चलव-बढ़व लाठी गोली-
खाए बर फेर आघू आवव ।
अंगरेजवा के नास करेव,
अब अंगरेजियत के नास करव ।
सन - सन्तावन के बेरा ह
घर-घर फेर जुवानी होगे ।।

गांधी के सपना नंदागे

गांधी के सपना सुराज आत्ते नंदागे ।
रोटी के दौंरी म तन मन फंदागे ।।
बियाज सहीं बाढ़थे छन छन म भूख
खाता म लिखागे जिनगी भर बर दुख
साहूकार चतुरा 'ठेंगा' म सरी करगे ।
हवेली के छइहां म घरघुंदिया बनथे
रेती महल कस फेर तुरते उजरथे
साहब के फूंके म सब्बो उड़ियागे ।
पइसा बिन कहां अब मिलथे नियांव
कौंवा मन साव ल करथे खांव-खांव
सत के कुरिया म लबारी हमागे ।
दरूहा कंगाल सहीं होगे हे थाना
बदमास के बेटा अउ सिधवा के नाना
बिलई के रखवारी म दूध ह सौंपागे ।
सिट्ठागे अब तो सेवा के गोठ ह
चोरहा ल राजा बना दिस हमर वोट ह
नंगरा अउ लुच्चा के राज आज होगे ।

सपना कस हो जाथे

जब अदियावन कोनो
अउ कोनो टन्नस दिखथे ।
तब राम राज के गोठ ह संगी
सपना कस हो जाथे ।।
बिजली बारे जब कोनो ह
खटिया म सूते रइथे ।
अउ कोनो ह आंखी फोरत
चिमनी कस रे जीथे ।
दार-भात चुरोय हंड़िया ह
कोनो ल जब अगोरथे ।

अउ कोनो ह एकर खातिर
बन-बन भटकत रइथे ।।
काई रचत कोनो बिलडिंग ह
जब बिरहा जिनगी जीथे ।
अउ कोनो छितका कुरिया ह
सैमो-सैमो करथे ।।
जांगर खातिर जब खेती ह
ककरो परिया परथे ।
अउ बिन खेती के जब कोनो
जांगर ह परिया परथे ।।

बसंत

बुढ़वा-बुढ़िया ठुड़गी-ठुड़गा
सब पाटी आज संवारत हें ।
राज करे बर जन-जन म
रितु राज बसंत पधारत हे ।।
गली-खोर मोर कुंजगलीन
अउ बस्ती गोकुल लागत हे ।
जाड़ म सूते उच्छल मंगल
आज घरों-घर जागत हे ।।
लकलक-लकलक परसा फूले
अउ सेम्हरा फाग गावत हे ।
अमरइया म कोइली कुहकत
ग्वालीन कस रे नाचत हे ।।
मगन होके घाट-घठौंदा
घेरी-भेरी इतरावत हे ।
कोनो टूरा बेलबेलहा कस
बादर ल बिजरावत हे ।।
आनी बानी के माहुर रचाये
मोटियारी सबो रे कुलकत हें ।
कामदेव के झूलना म उन
ठाढ़ मंझनिया झूलत हें ।।

मोर गांव के अजब कहानी

मोर गांव के अजब कहानी ।
सब्बो राजा सब्बो रानी ।।
वारा महीना बादर जइसे
आथे घूम-घूम जाथे,
जइसन-जइसन आदत सुभाव
तइसन बात बताथे ।
कोनो जाड़ अउ झांझ चलाथे
अउ कोनो बरसाथे पानी ।।
चइत बइसाख अउ जेठ म नोनी
गोबर लकड़ी फाटा बिनथे,
गाय-गरु संग ठाढ़ मंझनिया
बन-बन किंजरत रइथे ।
आज कहूं कन्हाई होतीस
वो पक्का होतीस राधा रानी ।।
असाढ़ सावन अउ भादो महीना
नांगर-बइला के होथे,
बंजर-भांठा अउ भर्री के
परिया टोर हरियर करथे ।
ऊंच-नीच कें भेद भुला वो
देथे सबला जिनगानी ।।
कुंवार कातिक अउ अगहन म
जड़कल्ला संग तिहार हमाथे,
जइसन खेती चाहकत रइथे
तइसन पूरा गांव चहाकथे ।
पाप के लंका लेस सबो
बदथें आपस म मितानी ।।
पूस मांघ अउ फागुन मस्ती
लेके घर-घर आथे,
नता-गोता ल चिन्हे नहीं
एक्कें रंग म रंगथे ।
कोन राम अउ कोन रहीम ये
अइसन म का जानी ?

घेक्खर दुकाल

घेक्खर सैंतान बन दुकाल फेर आगे ।
होरा कस भूंज भूंज कतकों ल खागे ।।
बादर ल देख-देख आथे रोवासी
बोये बर बो देन फेर बांचगे बियासी
एक्कें पानी बर करम हमर फाटगे ।
बंधाये नंदिया ल फेकटरी हर पी दिस
बलदा म खेती ल आंसू अउ दे दिस
नहर अउ बांधा अब नांव भर के होगे ।
नंज्जर भर झूलत धान के खेती
पैरा लहुटगे चंडाली के सेती
सुख के गोठ ह फुर्र ले उड़ियागे ।
राहत के काम अब कतकों बताथें
बाँट बांट पइसा ल खुदे उन खाथें
गांव के तरिया कागज म कोड़ागे ।
भूख अउ दुख कें गंगा अउ जमुना
सरकारी अस्वासन ये सरसती पुरेना
कुंभ सहीं पलायन कें भीड़ आज होगे ।
सपना कें सुतवा ह बनगे रे घांटी
चोचमे बर गिधवा खड़े हे मुंहाटी
नंगरिहा के भाग ह आज फेर नठागे ।

आज जमाना अइसे हे

नंगरा लुच्चा सबले उंच्चा
आज जमाना अइसे हे।

नाक कटा के गली गली म
नक्टा ढोल बजाथे,
अइसे होगे वइसे होगे
गा-गा खूब रिझाथे।
फेर गरीब के पेट ल देखले
जइसे रहिस तइसे हे॥

नंगा-नंगा के कमिया मन के
कोढ़िया मौज उड़ाथे,
अपन बिल्डिंग खातिर वोकर
घर ल रोज उजारथे।
जे सब बर छइहां बनाथे
तेकर उझरे कइसे हे॥

नांग सांप कस मेढ़री मारे
अत्याचारी ठाढ़े हे,
अउ जनता बपरी दूध सहीं
वोकर आघू माढ़े हे।
हाड़-मास के भोग लगइया
एमन रकसा जइसे हें॥

समर मचाना हे

आवव चलव जोड़ खांध बढ़व
रनभेरी संख बजाना हे ।
माटी कें मान रखे वर संगी
फेर आज समर मचाना हे ।।

जय खल्लारी जय महमाई
जय सीतला बमलाई हे ।
जय-जय चंडी रन के देवी
लहू आज पियाना हे ।।

डंडा झेलत जिनगी बीतगे
अउ कब तक फेंर सहना हे ।
बंदूक-भाला टंगिया-फरसा म
तिलक आज लगाना हे ।।

बिन पूछे-गौंछे खेती ल
गोल्लर अब तो रोज चरत हे ।
धर बांध पटक के संगी वोला
मेरखू असन छरना हे ।

सोसन बइमानी भस्टाचार ह
बेलबेलहा कस इतरावत हे ।
अरे ये दोगला के छाती ल
नरसिंग सहीं अब चिरना हे ।।

फक उज्जर सादा धारी ह
हंस नहीं रे कोकड़ा ये ।
अइसन ढोंगी रकसा मन के
खंड़री आज ओदारना हे ।।

जड़कल्ला

आंखी रमजत मुंह ल फारत
जड़कल्ला जब आथे ।
सुरूज नरायन लजकुरहा कस
दुरिहेच ले मुसकाथे ।।

घर ले बाहिर गली-खोर म
कनकनी खूब बरसथे
नवा तरइया के पानी हर
चांय ले कइसे ठरथे
नंदिया के पानी करा बरोबर
छाती धक ले करथे
दहरा जाड़ के मारे सरबस
हू हू हू हू करथे ।।

सुर-सुर सुर-सुर सुर्रा के संग
दंह डार कस डोलय
कटकट-कटकट दांत ह कइसे
दुख के बोली बोलय
लाठी टेंकट जिनकर जिनगी
भीख के सेती चलथे
जाड़ इंकर बर काल बरोबर
सुतत-जागत रइथें ।।

दारू कुकरा संग जिनकर बोली
कुंकरू कूं कस करथे
अइसन बलकरहा मनखे बर
जड़कल्ला खूब ठनकथे
सबके सुख ह इंकर बगल म
कइसे कलपत रइथे
बियाप गे नस-नस म जाड़ा
रकत सब्बो कें जमगे ।।

हमर हाथ हे जबड़ कमइया

चिटिक खेत अउ भर्री नहीं
हमला सफ्फो खार चाही ।
हमर हाथ हे जबड़ कमइया
सरी धरती अउ अगास चाही ।।

हमर पेट ह पोचवा हे, अउ
तोर कोठी म धान सरत हे,
हमरे खातिर तोर गाल ह
बोइर कस बमलाल होवत हे ।
गाय-गरु कस पसिया नहीं
हमला फुरहुर भात चाही ।।

तन बर फरिया-चेंदरी नइये
अउ तैं कहिथस जाड़ भागगे,
घर म भूरी भांग नहीं, तब
सुख के कइसे उमर बाढ़गे ?
चिरहा कमरा अउ खुमरी नहीं
पूरा साल - दुकान चाही ।।

ठाढ़ चिरागे दूनों पांव ह
जरत मंझनिया के सेती
हमर देंह ह होगे हे का
कइसे रे तोरेच पुरती ?
अब बेंवई परत ले साहन नहीं
हमला सुघ्घर छांव चाही ।।

ताना सुन-सुन कान पिरागे
लबारी के तोर धार बोहागे,
घुड़ुर-घाड़र लबरा बादर कस
अब तो तोरो दिन सिरागे ।
हमला आंसू कस बूंद नहीं
पूरा गंगा-पाताल चाही ।।

टेटकत हे किसान

जिनगी होगे आज पहुना, मरना बनगे मितान ।
आज जमाना उल्टा होगे, टेटकत हे किसान ।।
नांव बुतागे अब जंगल के
धनहा म बनगे महल अटारी
गांव लहुटगे लोहा खदान म
भांठा म बनगे जवड़ फेंकटरी ।
ये कइसन विकास आज के, अन्नदाता रहिथे लांघन ।।
नांगर बपरा गंज पढ़े-लिखे-
लइका क्स बेगार बनगे,
बइला घलो ओकरे सहीं
जिनगीं वर उधार होगे ।
मैं अकेल्ला कइसे करकैं, कामा बोहौं धान ।।
मीठ पानी के आस देवइया
तरिया चिट करिया होगे,
उत्ती खार के नरवा तक ह
अब तो रकत के रंग म रंगगे ।
कइसें कटही जिनगी, अब तो मरना हे भगवान ।।

गरमी

कोलिहा दुबके हुंड़रा सपटे
बाघ घलो तो थर-थर कांपे
डोली म चढ़के अंगरा के जब
सुरूज नरायन आ धमके
सांय-सांय बस्ती ह करथे
गर्रा जब भांय-भांय चलथे
चिरई-चिरगुन तक रूखवा म
अल्लर खाये सपटे रहिथे
गाय-गरू का अइसन म तब
कछोरा भीरे फुगड़ी खेलहीं ?

घर कें जीव ल जान-बूझ के
मरे बर जंगल म लेगहीं ?
तरिया ढोंड़गा नंदिया नरवा
सब रांड़ी कस आज होगे
जेठ–मंझनिया के तांडव म
जन-जन कोइला होगे
संकर जी के तीसर–नेत्र ह
काबर ते आज खुलगे
देखते-देखत मोर धरती के
छाती ठाढ़ चिरागे

जहर होगे

जहर होगे राम,
घुट-घुट के जिनगी मोर जहर होगे ।..

जागे हे भाग आज अमरबेल के
खात हे बेल ल देखो रे गुदेल के
ये कइसे होगे राम,
बिन जर कें नार ह रूखवा ल खागे ।..

कांटा के भंदई पहिरें हावन पांव म
सांप बनके बगरे हे दुख हमर गांव म
सब उल्टा होगे राम,
सुख कें सपना म घलो गरहन लगगे ।..

जिनगी कें घानी म सत ह पेरागे
कोन जनी कती ले कलजुग ये आगे
मन परबस होगे राम,
तन कें चिन्ता म मन दूसर के होगे ।..

अंधियारी के छाती चिरही

वीर नरायन तोर सपना ह
सुफल कहां फेर होवत हे ।
बस्ती-बस्ती गांव-गांव ह
भूख म आजो रोवत हे ।।

वाना बोहे तोर सपना के
मरगें फेर कतकों बलिदानी ।
नांव लिखाके इतिहास म
होगें सब अमर कहानी ।।

सुन्दर, प्यारे, खूबचंद कस
बेटा जनमिन ए माटी म ।
भुखहा-दुखहा बर तोरे कस
रेंगिन सत के परिपाटी म ।।

आज के लइका आंखी मूंदे
नीत-अनीत फेर झेलत हें ।
झींके छोंड़ कें सोसक मन ल
आघू डाहर अउ पेलत हें ।।

दावन ढीलाय हे फेर जंगल म
बरगे कतकों सोनाखान ।
का होही ए देस ल सोंच के
रोवत होहीं खुद भगवान ।।

आज कहूं तैं इहां होते
बंदूक-भाला फेर उठाते ।
माखन वनिया कें गोदाम कस
कतकों ल तैं फेर बंटवाते ।।

आथे सुरता जब-जब तोर
आंखी ले आंसू ढरथे ।
फेर बोहे बर तोर बाना ल
भुजा मोर फरकथे ।।

का होही अब काल कें चिन्ता
काकर बर हम करबो ।
तोरे देखाये रस्ता म अब
जिनगी भर हम रेंगबो ।।

रोटी खातिर फेर फांसी कें
डोरी चुमे परही ।
तभे तो घपटे अंधियारी के
छाती ल सुरूज चिरही ।।

रात पहावत हे

रात अब पहावत हे, अंधियारी पल्ला तानत हे ।
सुकुवा आंखी रमजत, सुरूज ल बलावत हे ।।

दुख अब होगे पहुना, सुख छरिया जाही
घरों-घर बगरे भूख के, मुंह करिया जाही
बीपत अब भागे बर, संदूक अपन जोरत हे ।।

कइसे फोकट जाही पछीना काला डरवाही मंझनिया
जुड़वा कस होगे अब तो, संझा अउ बिहनिया
नाच रे मंजूर अब झूम के, बादर करियावत हे ।।

अमावस कबके बीतगे, आज तो पुन्नी होगे
लांघन के गोठ अब तो, गजब दिन्नी होगे
तुरते बोह नांगर ल, धरती रस्ता जोहत हे ।।

हाय दलाली

हाय दलाली तोर महिमा हे
देवी कस ओ भारी ।
कभू बोफोर्स अउ कभू चुरहट म
होथे तोर चिन्हारी ।।

राजा परजा सब बइहाय हें
पाये वर ओ तोला ।
फेर सबला धोखा देके
पोठ करबे तैं मोला ।।

सवा पांच रुपिया के मैं ह
तोला भोग चढ़ाहूं ।
जतका तोर पुजारी हे
सेवा म सबला पछवाहूं ।।

तोला रोज दुहूं मैं नावा
सुघ्घर लुगरा-पोलखा ।
तोर बिरहा म जबड़ पेट मोर
होगे हे देख खोलखा ।।

अभो कहूं तैं धोखा देबे
गरीब जान के मोला ।
नंगत ठठाहूं नास्तिक बनके
सोच ले मैं हर तोला ।।

तोरेच खातिर मोर देस म
'गैस' के चुल्हा बरथे ।
नइते कतकों बपरा मन ओ
घुट-घुट के मरथें ।।

तहीं ईमान अउ तहीं धरम
तहीं आस ओ सरबस ।
हरिसचंद के सत्य तहीं अस
अउ तैं मंहगाई बर तरक्स ।।

आज घरों-घर उच्छल मंगल
तोरेच खातिर होथे ।
तभे तो पाय बर लोगन तोला
घेरी-भेरी गोहराथें ।।

खदान सहीं होगे गाल

भूख के खदान सहीं होगे मोर गाल ।
विधाता चोला के होगे न बाराहाल ।।

बैरी बनगे बादर करिया
खेती परगे जुच्छा परिया
अब कइसे बुलकही एसो साल ।...

खुर्रा बोये बर गुनेंव मैं ह
थोरको बरसबे सोचेंव तैं ह
मोर नांगर के टुटगे रे फाल ।...

पंड़की चपके तबले कोचेंव
बिना ओल के मैं ह जोतेंव
मोर बइला के छांड़गे रे खाल ।...

जिनगी के रूखवा सावन म झरगे
सपना के महल तुरते उजरगे
गाज गिरगे छाती म बनके काल ।...

आजा गांव म

आजा रे आजा गांव म ।
सरग जस सुघ्घर ठांव म ।।
चंदा के हांसी देखबे, चदैनी कें ठिठोली,
सुरूज ह इहें बोलथे, सुख के रे बोली ।
बादर ह जस पाथे, इहेंच के नांव म ।।
धान के हरियर लुगरा, धरती इहें पहिरथें,
माथ म टिकली ओकर, परसा इहें लगाथे ।
खोपा सज जाथे इहें, झबड़ी के छांव म ।।
नंदिया कें जवानी दिखथे, इहें के कछार म,
बांधा ल बिजराथे ओ तो, इहेंच असाढ़ म ।
डोंगरी कें छाती चिरथे, अपन के दांव म ।।

आंखी फरकावत हे

किसान ल देदे संदेस पवन, के बादर आवत हे ।
चढ़े असाढ़ के डोली म, आंखी फरकावत हे ।।

कहिबे नांगर ल वो हर सजा लेही
बइला ल खवा के अच्छा मोटवा लेही
धरती संग बिजहा के मिले के दिन आवत हे ।।

जेठेच म अंकरस जोते होही वो तो
माड़ी भर खन्ती खनवाय होही वो तो
गर्रा अउ गरेर के दिन अब पहावत हे ।।

कांटा-खूंटी ल पहिलीच ले बीने होही
ढेला ल भरका म बने अस तोपे होही
कन्हार अउ मटासी के भाग आज जागत हे ।।

मोर कबीरा कोंदा होगे

आज लकालक लोहा दिखथे
जुच्छा परगे धान कटोरा
देख तभो सब आंखी मूंदथें
अउ कोंदा बनगे मोर कबीरा

जंगल झाड़ी झबड़ी डोंगरी
अउ रूख-राई के नांव बुतागे
नंदिया नरवा मन बिन पानी के
सावन म रे सुक्खा परगे

कोन घमंडी बांधा के अब
छाती म चढ़के तांडव करही ?
कोन लेसे वर पापी मन ल
गुंगुवा के रे फेर भभकही ?

आज तो सरबस लेढ़वा भरगे
बस्ती म पूरा सोनाखान के
बंदूक-भाला-मरजाद तियाग सब
भागत हें रे पल्लातन के

कइसे करके अब जिही मनखे
अइसन अलकर भुइयां म
सोच-सोच अब माथा पीटथौं
कब जाबो सुघ्घर छइहां म

आज तो खुदे दुसासन बनगे
हमरेच मन के अघवा मन
अउ कोलिहा के चोला ओढ़त हें
जनम-जनम के बघवा मन

अइसे म कइसे नइ होही
खेती हमर ले दूसर के
का जानी कब जोर देखाहीं
सब लाठी-बेड़गा-मूसर के ।

पारो

कल कल नंदिया, नरवा छल छल
झील मुढ़न ये तरिया हे
पुरवइया संग खेलत खेलत डोंगरी
सपना तक ले बढ़िया हे

माथ के टिकली कस चुकचुक ले
वस्ती हे बीच म मोर
सुरूज नरायन के किरन कस
हे जेकर अड़वड़ सोर

गली-गली म देवता-धामी
डगर-डगर म हे इमान
कालचक्र के मारे फेर येहू
अब हावय हलाकान

राम राज कस लागय पहिली
अब तो बाराहाल हे
देवता भेस म मनखे कोनो
जब पूरा चंडाल हे

जंगल पारा म बस्ती के
कुंदरा एक ठन राहय
दुख-पीरा ल जाने वोहा
कइसे साहत राहय

दाई-ददा के मरे बाद म
पारो इहें बाढ़िस
काला सुघ्घर सपना कइथे
तेला वो नइ जानिस

होस सम्हालत वनी बुता म
जेकर जिनगी बीतय
तेकर मन म का फागुन
अउ का सब्बन ह अभरय

उमर कें संग म चाम बाढ़गे
फेर मन कें आस कहां बाढ़य
नजर मिलइया कतकों राहंय
फेर एकर नजर कहाँ माढ़य

बड़े फजर ले कुकरा बासत
पारो वो दिन जागिस
काली सहीं आज झन हो जाय
सोंचत हफरत भागीस

फेर भाग के लेखा ह
कहां कोनो ल छोड़े हे
दुख के संग म छांव सहीं
भूख ल तो वो जोड़े हे

बेरा ऊगे काली जइसे
खेत पहुंचे के पहिली
कतकों दौंड़िस-भागीस फेर
नइ मिलिस आजो भूति

गांव के अउ आने मनखे
रोपा रोपत राहंय
थरहा धरकें तुरते अपनो
बुता म भीड़े बर सोंचय

फेर दाऊ हर टेड़गा मुढन
पहिलीच ले वोला टोंकिस
हाथ-पांव जोरे म घलो
वोकर रस्ता छेंकिस

करिस केलौली पारो भारी
तब ले वो नइ टघलिस
उल्टा अनीत करे बरोबर
वोकर ऊपर बिफरिस

देखत नइ हस बेरा ऊ के
तरूवा म कइसे चढ़गे

काल चेताय रेहेंव तबले
मसमोट्टी तोर बाढ़गे
जा आजो तैं अपन घर म
बेरा बूड़त ले सुतबे
फेर काम तभे दुहूं जब
बेरा ऊये कें पहिली आबे

अभी बेरा ह चढ़े कहां हे
दाऊ ल कहिस पारो
ऊ भर के तियार होय हे
तब कइसे कहिथस जा ओ
दू लांघन अउ एक फरहार के
जब बात बताइस पारो
तब दाऊ ह अपन पाप ल
गुनिस कान म डारों

घेवखर होके कहि दिस दाऊ
बनजा तैं मोर सुवारी
दूध दही संग रोज झड़कबे
माल-पुवा-सोंहारी
गुनिस पारो--देख ले एकर
कइसन हाबय चाल
झरगे जम्मो दांत आधू कें
अउ बनथे सोला साल

फेर मुंह ले अइसन बक्का
कइसे करकें फूटय
भाग के लेखा ल गुन-गुन के
माथ ल वो तो पीटय
सोंचिस दाऊ राजी होगे
पारो बिरहा भोगत
धान के बाली कस डोले बर
वो तो सोंचत-सोंचत

लार चूहगे दाऊ के अउ
धर दिस वोकर बांहां
फेर भला अइसन मंसा
पारो के रहिस कहां

सबके आघू अइसन करनी
नइ तो वोला भाइस
दूसर हाथ म अउ चरस ले
गाल ल वोकर दे दिस

बमलाल होगे फेर तुरते
दाऊ के दूनो गाल
सपना तक म नइ सोचे रहिस
अइसन होही हाल

तीर-तखार के जम्मो मनखे
खुलखुल-खुलखुल हांसय
फेर दाऊ के रकसा कस
घुस्सा ल उन जानंय

का जानी कब का कर देही
सुंड-भुसुंड गुंडा संग
तेकर ले चुपचाप भिड़ जाई
धरके मांग उत्ती अंग

दाऊ के आंखी अंगरा बनगे
अउ भभके लगिस जवानी
कहिस–टूरी तोर ए घमंड ल
टोरिहौं तब पिहौं पानी

आज बेरा के बूड़त ले
घर म मोर मढ़ा देबे
खाए हस तैं जतका बाढ़ी
तेला सोझ अमरा देबे

सोंच लेबे नइते रतिहा
मैं का कर दिहौं तोला
पहिलीच ले चेता देंव
अब दोस झन देबे मोला

आजेच कइसे छुटिहौं मैं ह
दाऊ के करजा-बाढ़ी
एक ठन तक बीजा रांधे बर
फूटगे हे मोर भांड़ो

गुनत-गुनत रेंगिस पारो
जाये बर अपन कुरिया
फेर कुरिया ह सुख सहीं
होवत जाय दुरिहा

कइसे करके कइसे करिहौं
गुनत दिन पहागे
तभे लठेंगरा धर के दाऊ
वोकर दुवार आगे

हेर बेंस ल कहिके दाऊ
बाहिर ले चिल्लाइस
फेर भितरी ले थोरको आरो
बाहिर म नइ आइस

पारा भरके जम्मो मनखे
वो तीर झूमगें राहंय
भितरी ले आरो नइ पाय म
अन्ते-तन्ते काहंय

चाम बाढ़गे हे टूरी के
मोला तो अब अइसे लागे
एक झन काहत राहय दूसर ल
का धरके कोनो ल भागगे

दूसर कहिस-तोर बुध ल
का गइया चारा चरगे
भितरी ले संकरी लगे हे
तब वो कती ले भागगे

दाऊ के डर म वो बपरी ह
घर म सपटे होही
कोनो तीर म आंसू ढारत
दुख म सुसकत होही

आज गरीब के माथा म
इही तो बात लिखाथे
जेकर खातिर उन कमाथें
तेने उनला खाथें

का जानी कब तक चलही
सरलग अइसन करनी
कब हमरो दिन लहुटही
कब पाबो सुघ्घर छानी

तभे दाऊ ह बेंस टोरे बर
कहि दिस एक लठेंगरा ल
हुकुम सुनत वो तुरते टोरिस
बांस-फांस के फरिका ल

अंगना नहाक के परछी चढ़गे
दाऊ छाती ताने
काल बरोबर दिखत रहय वो
बलदा ले बर ठाने

कुलुप अंधियारी म फेर
पारो नइ दिखत राहय
साँस रोक के कइसे लुकाय हे
सब अइसने सोंचत राहंय

तभे चोंगिहा ह एक झन
माचिस हेर के बारिस
देख नजारा भितरी के वो
ठाढ़े-ठाढ़ सूखागिस

बरफ सहीं सब जमगे उहें
न डोलयं न बोलयं
का होगे आज रोटी खातिर
सब एक्के बात ल गुनयं

कहां ले बल पागे पारो
अपनेच लुगरा म झूलगे
कइसे करके फांदा बनाइस
अउ कइसे ओमा झूलगे

देख पारो के लामे जीव ल
दाऊ गुनिस मैं फंसगेंव
बूढ़त काल म मसमोट्टी खातिर
थाना म आज धसगेंव

फेर का गुनिस अउ बल करके
सबला ओ धमकाइस
कहूं पुलिस के आघू बोलेव
ते तुंहरो लास निकलिस

अतका सुनिन ते जनता जम्मो
आगी कस भभकगे
अउ तुरत धरके दाऊ ल उन
पीटत थाना लेगें

कइसे उन आज जागीन
कहां ले हिम्मत आइस
का पारो के दुरगत देंह ह
उनला रस्ता देखाइस

राम करय हर गांव के पारो
दुरगत देंह देखावय
अरे इही बहाना छत्तीसगढ़ म
नवा बिहान तो आवय

टूरा के गीत

ये लरहा टूरा भइया, मारय फूटानी का ग
ये लरहा टूरा ...

एक ठन आंखी ह पोचवा हावय
जेवनी गोड़ हावय खोरवा
पीठ के कूबरा कूड़ेरा बरोबर
अउ नाके हाबय गा ये भोथवा
तभो ले टूरा दहेज बर घोनडइया मारय का गा
यें लरहा टूरा....

मुड़ के चेंदवा टसक बरोबर
अउ पेट हाबय ग ये हंड़िया
दांत मन रापा कस हाबय ग भइया
अउ रूपे हे कोइला कस करिया
तभो ले टूरा ह लक्ष्मी जइसन टूरी खोजय का गा
ये लरहा टूरा.....

काने हे बुचबा अउ माथा म फोटका
कुकुर पूछी कस मन हाबय भइया
काला बतावौं मोर संगी जउंरिहा,
रकसा कस दिखथे वो पूरा ग भइया
तभो ले टूरा घरजिया खोजय का गा।।.......

गीत

बिदेसिया कइसे मनावंव मैं तिहार......

सावन बीतगे, भादो निकलगे
मांघ-पूस के दिन घलो पुरगे
माते हे फागुन कें तिहार ॥........

लिख-लिख पतिया भेजेंव तोला
सोर घलो नइ दिए रे तैं मोला
अब लागत हे डोंगा मंझधार ॥.......

देखत रस्ता आंखी भरगे
ठाढ़े-ठाढ़ मोर चिता बरगे
सरपिन कस होगे निस्तार ॥.......

गुन के रोथे माथा के टिकली
पंड़री परगे ये लाली रे फुंदरी
आँसू ढरकाथे सब सिंगार ॥........

रितुआ फुहार

आवत हावय झूलत-झूलत रितुआ फुहार।
मोर धरती मइया कें करे बर सिंगार ॥

डारा पाना डोलत हावय, पुरवइया के संग
पपिहारा के मीठ बोली, सुनावथे चारों लंग
करिया बादर गरजत हे, बिजुरी घलो चमकत हे
मोर देस म हरसावत हे देखौ खार-खार ॥........

नंदिया-नरवा मेछरावत हे देख के बादर
रेंगत हावय अपन-अपन पिया के घर
बइला मन हुंकरत हे, बछरू घलो फुदरत हे
किसान झुमर नाचत हे बोह कें नांगर ॥..........

मयारु माटी

मोर मयारु माटी, सुख-दुख के तैं सांथी.....

मुड़ म मटुक हिमालय सुघ्घर
तोर पांव के माहुर सागर
सरी दुनिया के जस ले हे ओ
तोर जस ह आगर
मन हे तोर गंगा जस निरमल
तन हे तोर लोहाटी ।।....

खेत-खार तोर सुघ्घर ओढ़ना
उवत सुरूज हे माथ के टिकली
नंदिया-नरवा गहना-गुरिया
घुमड़त बादर हे तोर फुंदरी
अपन बर तैं भारी सिधवी
बैरी बर आगी-लूठी ।।....

मया बोहागे तोर बनके जमुना
सब पाथें तोर दुलार
उत्ती-बुड़ती चारों कोती
अन-धन के भंडार
राजा-परजा आवव सब मिल
दुख-सुख ल हम बांटी ।।.....

आवरण मुद्रक : स्क्रीन आर्ट
रायपुर